RESEARCH PAPER

RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal
e-ISSN: 2349-7637 | Vol.09 | Iss.02 | February 2022 | pp. 10-13
Double-Blind Peer Reviewed/ Refereed Journal

English translation of 'Barrister': Dialectics and Balance
'बैरिस्टर' का हिंदी अनुवाद : द्वंद्वात्मकता और संतुलन

Prof. (Dr.) Siddheshwar Vitthal Gaikwad

Professor & HOD, Hindi, Bharatiya Jain Sanghatna's A.S.C. College, Wagholi, Tq.Havali Dist.Pune Pin-412207 Maharashtra, India

Abstract

Barrister is a famous Marathi play written by Jaywant Dalvi. Dalvi ji is recognized as a fine writer in the Marathi theater field. Barrister is a dramatization published in 1977. Three years after the original was published, Dr. Vijay Bapat translated it into Hindi in 1980 and placed it in front of the theater-loving readers of the Hindi region. The play deals with social themes, in which the pathetic condition of widows has been clarified. Dr. Vijay Bapat has translated it into Hindi as this topic is new for Hindi theatrical lovers. It is not possible to discuss the entire dramatization here because of the fear of expansion. That's why we are discussing here the English translation of the Barrister: dialectics and balance only. Translation always has to strike a balance between the two situations, like- original author translator, original author and other readers, cohesiveness and equanimity, original text translated text, Native Language Idioms and Translated Language Idioms.

Keywords: *original author translator, original author and other readers, cohesiveness and equanimity, original text translated text*

Abstract in Hindi

बॅरिस्टर जयवंत दलवी द्वारा लिखा गया मराठी का प्रसिद्ध नाटक है। दळवी जी मराठी नाट्य क्षेत्र के अतिरिक्त ललित लेखक के रूप में मान्यता प्राप्त है।बॅरिस्टर 1977 में प्रकाशित नाट्यकृति है। मूल रचना के प्रकाशित होने के तीन साल बाद डॉ.विजय बापट ने इसे 1980 में हिंदी में अनूदित कर हिंदी प्रदेश के नाट्यप्रेमी पाठकों के सामने रखा। नाटक सामाजिक विषय से संबंधित है, जिसमें विधवाओं की दयनीय अवस्था को स्पष्ट किया गया है। हिंदी नाट्य प्रेमियों के लिए यह विषय नया होने के कारण डॉ.विजय बापट ने इसे हिंदी में अनूदित किया है। संपूर्ण नाट्यानुवाद की यहाँ चर्चा करना विस्तारभय के कारण संभव नहीं है। इसलिए हम यहाँ बॅरिस्टर का हिंदी अनुवाद : द्वंद्वात्मकता और संतुलन यहीं तक सीमित रहकर चर्चा कर रहे हैं। अनुवाद में हमेशा दो स्थितियों में संतुलन स्थापित करना पडता है। जैसे– मूल लेखक अनुवादक, मूल लेखक तथा दूसरे पाठक, सामासिकता और उद्रिक्तता, मूल पाठ अनूदित पाठ, मूल भाषा के मुँहावरे अनूदित भाषा के मुँहावरे

Keywords: *मूल लेखक अनुवादक, मूल लेखक तथा दूसरे पाठक, सामासिकता और उद्रिक्तता, मूल पाठ अनूदित पाठ*

Article Publication

Published Online: 20-Feb-2022

***Author's Correspondence**

Prof. (Dr.) Siddheshwar Vitthal Gaikwad

Professor & HOD, Hindi, Bharatiya Jain Sanghatna's A.S.C. College, Wagholi, Tq.Havali Dist.Pune Pin-412207 Maharashtra, India

sgaikwad78@gmail.com

10.53573/rhimrj.2022.v09i02.002

© 2022 The Authors. Published by RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

भूमिका:

'बॅरिस्टर' जयवंत दलवी द्वारा लिखा गया मराठी का प्रसिद्ध नाटक है। दलवी जी मराठी नाट्यक्षेत्र के अतिरिक्त ललित लेखक के रूप में मान्यता प्राप्त हैं। उन्होंने कहानी, उपन्यास, एकांकी तथा कई नाटक लिखे हैं। उनके नाटक निम्नानुसार हैं–

1. संध्याछाया 2. बॅरिस्टर 3. सूर्यास्त 4. महासागर 5. दुर्गी 6. सभ्यगृहस्थ हो 7. सावित्री 8. पुरुष 9. पर्याय 10. मुक्ता 11. हरी–अप–हरी! 12. स्पर्ष 13. कालचक्र 14. मी राष्ट्रपती 15. लग्न आदि।

जयवंत दलवी ने अपनी ही कहानियों तथा उपन्यासों के आधार पर नाट्यनिर्मिति की है। 'बॅरिस्टर' नाटक उनके उपन्यास – 'अंधाराच्या पारंब्या' पर आधारित है। बैरिस्टर एक समस्याप्रधान नाटक है। इसमें विधवाओं की दयनीय स्थिति दर्षाई गई है।

अनुवाद अध्ययन के लिए अनुवादक द्वारा साधे गए संतुलन को देखना अत्यंत आवष्यक है जिससे अनुवाद में सममूल्यता का निर्णय करना संभव होता है। साथ ही अनुवादक की कुषलता सजगता सक्रियता, अध्ययनषीलता का भी इससे पता लग सकता है। द्वंद्वात्मकता के कई आयाम हो सकते हैं। इन सभी पक्षों का विचार न कर प्रस्तुत नाटक के अनुवादक द्वारा साधे गए संतुलन के प्रमुख बिंदुओं का यहाँ सोदाहरण परिचय लिया जा रहा है।

मूल लेखक तथा दूसरे पाठक के बीच संतुलन

मूल 'बैरिस्टर' 1977 में प्रकाषित नाट्यकृति है। मूल रचना के प्रकाषित होने के तीन साल बाद डॉ. विजय बापट ने इसे 1980 में हिंदी में अनूदित कर हिंदी प्रदेष के नाट्यप्रेमी पाठकों के सामने रखा। मूल नाटक का विषय सामाजिक है तथा विधवाओं की दयनीयता को स्पष्ट करता है। मूल विषय तथा लेखक के आकर्षण से प्रस्तुत अनुवाद कार्य संपन्न हुआ है। अनुवादक ने मूल लेखक की भावनाओं को दूसरे पाठकों के सामने रखकर द्वंद्वात्मकता में संतुलन साधा है। यहाँ अनुवादक ने अपने समय की हिंदी का प्रयोग किया। अनुवादक डॉ. विजय बापट ने मूल में अभिव्यक्त सभी तत्वों को यथासंभव समान रूप से दूसरे पाठकों के सामने रखा है। कुछ उदाहरणों से हम अपनी बात को स्पष्ट करना चाहते हैं–

मूल मराठी – 1

बॅरिस्टर : गुड मॉर्निंग, भाऊराव! (भाऊराव ओषाळून हसतात) काय हे. भाऊराव? (पृ. 3)

हिंदी अनुवाद

बैरिस्टर : गुड मार्निंग, भाऊराव! (भाऊराव दीनता से हँसते हैं।) क्या आदमी हैं आप भी भाऊराव। (पृ. 13)

मूल मराठी – 2

नमस्कार करून ती आत आपल्या घरी वळते भाऊराव ओषाळून उभे. (पृ. 5)

हिंदी अनुवाद

वह पाँव छूकर अपने घर की तरफ बढ़ती है। भाऊराव दीन–सी मुद्रा बनाए खड़े हैं। (पृ. 15)

मूल उदाहरणों में आया हुआ शब्द 'ओषाळून' को अनुवादक ने 'दीन–सा' के रूप में अनूदित कर मूल लेखक और दूसरा पाठक के बीच अच्छा संतुलन स्थापित किया है।

सामासिकता और उद्रिक्तता के बीच संतुलन

मूल की सामासिक अभिव्यक्ति को कहीं–कहीं अनुवादक ने विस्तार देकर अनूदित किया है। इसे हम अनुवादक द्वारा सामासिकता और उद्रिक्तता के बीच साधे गए संतुलन का उदाहरण मानते हैं। एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

मूल मराठी –

बॅरिस्टरांचा वडिलार्जित वाडा प्रचंड असला तरी त्यात अवघी तीन माणसे राहतात– बॅरिस्टर, त्यांचे थोरले बंधू नानासाहेब आणि त्यांची विकेषा विधवा मावषी (पृ. 1)

हिंदी अनुवाद

बैरिस्टर का खानदानी बाडा काफी बड़ा होने के बावजूद उसमें कुल तीन आदमी रहते हैं– बैरिस्टर, उनके बडे भाई नाना साहब और उनकी विधवा मौसी– जिनके सिर के बाल मुंडे हुए हैं। (पृ. 9)

मूल उदाहरण में 'विकेषा' को 'जिनके सिर के बाल मुंडे हैं' के रूप में अनूदित करके अनुवादक ने सामासिकता और उद्रिक्तता के बीच संतुलन साधा गया है।

दो विषिष्ट पाठों के बीच भाषास्तरीय द्वंद्वात्मकता में संतुलन

मराठी और हिंदी का पारिवारिक स्रोत एक ही अर्थात् संस्कृत है। फिर भी इन दो भाषाओं का व्याकरणिक गठन, शब्दकोष आदि कई स्तरों पर एक दूसरे से अलग अस्तित्व दिखाई पड़ता है। व्याकरणिक गठण तथा शब्द कोष आदि का अंतर इन भाषाओं के अनुवादों में द्वंद्वात्मकता की कई स्थितियों को जन्म देता है। अनुवादक ने प्रस्तुत अनुवाद में अनेक जगहों पर द्वंद्वात्मकता में संतुलन साधा है तथा मराठी के एक महत्वपूर्ण सामाजिक तथा समस्याप्रधान नाटक को हिंदी पाठकों के सामने रखा है। अनुवादक ने उद्दिष्ट पाठकों की भाषा विषयक सुविधा का ध्यान रखते हुए बहुस्तरीय संतुलन साधा है। जैसे–

मूल मराठी – 1

राधा : मोठी चावट आहे बाई – (पृ. 11)

हिंदी अनुवाद

राधा : बड़ी वो हैं मौसीजी... (पृ. 21)

प्रस्तुत उदाहरण में मूल में जो शब्द 'चावट' है उसका अनुवादक ने 'बड़ी वो है' के रूप में अनुवाद किया है। यह दोनों पाठों के बीच संतुलन ही है। 'चावट' शब्द मराठी में अपने साथ एक विषिष्ट अर्थ लिए हुए है वही अर्थ 'बड़ी वो है' के माध्यम से अनुवादक ने दूसरे पाठकों को देने की कोषिष की है।

मूल मराठी – 2

राधा : छे! माझी खूप इच्छा होती, त्यांच्या हातच्या चार अक्षता पडाव्यात. (पृ. 21)

हिंदी अनुवाद

राधा : ना... पर मेरी तो काफी इच्छा थी कि वे आए– (पृ. 34)

प्रस्तुत उदाहरण का अनुवाद हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुसार किया गया है। मूल उदाहरण में एक सांस्कृतिक संदर्भ से युक्त शब्द है 'अक्षता' जिसे अनुवादक ने छोड़ दिया है। परंतु पूरे वाक्य को यदि पढ़े तो राधा की यही इच्छा है कि उसके पिताजी उसकी शादी में आए। इस दृष्टि से किया गया अनुवाद द्वंद्वात्मक स्थिति में संतुलन का उदाहरण मानना चाहिए। यद्यपि सांस्कृतिक संदर्भ के कारण अनुवाद में थोड़ा–सा विचलन आया है तथापि पूरे वाक्य तथा आगे पीछे के संदर्भ को देखे तो अनुवादक द्वारा किया गया अनुवाद यथा संभव विषुद्ध और यथावष्यक संप्रेषणीय है। अतः यह दो विषिष्ट पाठों के बीच भाषास्तरीय द्वंद्वात्मकता में संतुलन का उदाहरण है।

मूल मराठी – 3

राधा : हां..... हां (एकदम भानावर येत) कडबोळी कडबोळी करणार... (पृ. 23)

हिंदी अनुवाद

राधा : हाँ.... हाँ.... कुछ बना लूँगी नमकीन– वमकीन। (पृ. 36)

प्रस्तुत उदाहरण का अनुवाद भी हिंदी भाषा की प्रकृति को सुरक्षित रखते हुए किया है। अनुवादक ने 'नमकीन' के साथ 'वमकीन' इस सहप्रयोग का उपयोग किया है। हिंदी में ऐसे सहप्रयोग युक्त शब्दों की योजना अनेक स्थानों पर की जाती है। मूल मराठी में प्रयुक्त 'कडबोळी' एक खाद्य पदार्थ का नाम है। यह पदार्थ विषेषकर ग्रामीण जीवन से संबंधित है। यह खाद्य पदार्थ नमकीन होता है। अनुवादक इस पदार्थ के लिए ठीक वही अर्थ देने वाला शब्द नहीं दे पाए हैं इसलिए उस

पदार्थ की विषेषता को व्यक्त करने वाले शब्द की योजना कर अनुवादक ने द्वंद्वात्मक स्थिति में संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया है।

मूल मराठी – 4

मावषी : जळ्ळी मेली झोप यांची... रात्री जरा लवकर झोपावं... राधाक्का एऽऽ राधाक्का– (पृ. 45)

हिंदी अनुवाद

मावसी : अजीब नींद है... रात में जरा जल्दी सो जाना चाहिए राधा.... ओ राधा– (पृ. 58)

मूल उदाहरण के 'जळ्ळी मेली झोप' का 'अजीब– नींद है' के रूप में अनुवाद यह दो विषिष्ट पाठों के बीच भाषा स्तरीय द्वंद्वात्मकता में संतुलन का अच्छा उदाहरण है। मूल अभिव्यक्ति 'जळ्ळी मेली झोप' मराठी की बोलचाल की भाषा का एक रूप है, अनुवादक ने स्रोत भाषा की अभिव्यक्ति को सही ढंग से पकड़ते हुए अपने भाषा ज्ञान का परिचय देते हुए इसे 'अजीब नींद है' के रूप में अनूदित किया है। यहाँ अनुवादक ने सषक्त पर्याय दिया है।

निष्कर्षः

उपर्युक्त उदाहरणों का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि अनुवादक डॉ. विजय बापट ने मूल भाषा की अभिव्यक्तियों को सही ढंग से पकडते हुए उनके लिए सही पर्याय देने की कोषिष की है। सांस्कृतिक संदर्भ के कारण कहीं–कहीं मूल अभिव्यक्ति और अनुवाद में किंचित–सा विचलन भी आ गया है। मगर संपूर्ण प्रसंग को देखते हुए अनुवादक का प्रयास सही और स्तुत्य लगता है। अनुवादक द्वारा किए गए संतुलन दो विषिष्ट पाठों के बीच भाषास्तरीय द्वंद्वात्मकता में संतुलन के उदाहरण हैं।

संदर्भः

बॅरिस्टर (1977), जयवंत दळवी, के.वि.कोठावळे मॅजेस्टिक बुक स्टॉल, गिरगाँव, मुंबई–4

बैरिस्टर (1980), विजय बापट, सरस्वती विहार, जी.टी.रोड, शाहदरा, दिल्ली –32